शुष्क वन अनुसंधान संस्थान एवं जयनारायाण विश्वविध्यालय, जोधपुर के सयुंक्त तत्वाधन में आयोजित वन महोत्सव का 2014 का संक्षिप्त विवरण

भारतीय संस्कृति में औरण एवं गोचर की परिकल्पना के साथ शुद्ध एवं स्वस्थ पर्यावरण की रचना की गयी थी। तथा भारतीयों की यह सोच हजारों वर्षों से सम्पूर्ण विश्व के लिए एक मिसाल थी। आज हम अपनी संस्कृति को भूलकर भौतिक लालसा के कारण इस स्थिति में पहुँच गये है कि हमें पर्यावरण को संरक्षित एवं संवर्धित करने के लिए वन महोत्सव एवं अन्य कार्यक्रम आयोजित करने पड़ रहे है। यह उद्गार जोधपुर के संसद सदस्य श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी), जोधपुर एवं जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित वन महोत्सव 2014 में मुख्य अतिथि के रूप में अपने उद्बोधन में व्यक्त किये। श्री शेखावत ने कहा कि कभी पर्यावरण का विश्व गुरु रहा भारत आज भोगवादी संस्कृति की आड़ में अपने सांस्कृतिक मूल्यों को भूल चुका हैं ऐसे में आज जरूरत हैं कि देश का प्रत्येक नागरिक अपने अधिकारों के साथ कर्त्तव्यों/उत्तरदायित्वों को समझे और पर्यावरण के प्रति जागरूक बने जिससे आने वाली पीढ़ी के लिए स्वच्छ एवं शुद्ध वातावरण का निर्माण किया जा सके। श्री शेखावत ने लोगों से अपना एक निश्चित आयाम चयनित कर जीवन पर्यन्त उस हेतु कार्य करने की महत्ता प्रतिपादित की। इस अवसर पर अपने उद्बोधन में सभापति आफरी निदेशक डॉ. टी.एस. राठौड़ ने वन महोत्सव का इतिहास बताते हुए वनों के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभों की जानकारी दी। डॉ. राठौड़ ने बताया कि जलवायु परिवर्तन का प्रभाव कम करने के लिए वृक्षारोपण ही एक महत्वपूर्ण कार्य है तथा इस हेतु काम जन में जन जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम में जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के सिंडीकेड सदस्य डॉ. अखिल रंजन गर्ग ने पर्यावरण सुधार की हर स्तर पर आवश्यकता बताई उन्होनें अपने उद्‌बोधन में कहाँ कि पर्यावरण सुधार से स्वास्थ्य उत्तम रहता है तथा इससे कार्य क्षमता में भी वृद्धि होती है जिसका सीधा असर देश की आर्थिक उन्नति पर पड़ता हैं। सिंडीकेड सदस्य डॉ. डूंगरसिंह खींची ने वन महोत्सव को त्यौहार के रूप में मनाने का आव्ह्ना करते हुए कहा कि आदि काल से ही मानव जाति का वृक्षों से सम्बन्ध रहा है तथा मरु क्षेत्रों में वनों का प्रतिशत बढ़ाने के लिए अधिकाधिक वृक्षारोपण की जरूरत है। पूर्व सिंडीकेट सदस्य गुलाबसिंह चौहान ने वृक्षारोपण के साथ जीवनपर्यन्त उनकी सार-संभाल करने की जरूरत बताई। महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर के सिंडीकेट सदस्य प्रोफेसर कैलाश डागा ने हर व्यक्ति को अपने जन्मदिवस पर एक पौधा लगाकर उसका पालन पोषण करने का आव्ह्ना किया। कार्यक्रम में अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में वाणिज्य संकाय के अधिष्ठाता प्रोफेसर ललित गुप्ता ने वन महोत्सव एवं इस प्रकार के कार्यक्रमों के लगातार आयोजन करने एवं सभी को देश के पर्यावरण विकास हेतु कार्य करने का आव्ह्ना किया।

कार्यक्रम के आरम्भ में वन महोत्सव के संयोजक एवं इतिहास विभाग के प्रोफेसर डॉ. दिनेश राठी ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए सम्पूर्ण विश्वविद्यालय को हरा भरा बनाने हेतु हर स्तर पर कार्य करने का आव्ह्ना किया। उन्होनें माननीय संसद सदस्य श्री गजेन्द्र सिंह से जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय को केन्द्रीय का दर्जा दिलाने हेतु प्रयास करने का विनम्र निवेदन किया। कार्यक्रम में आफरी के कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभागाध्यक्ष डॉ. डी.के. मिश्रा तथा अन्य अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया तथा सभी अतिथियों को साफा पहनाकर स्मृति चिन्ह् भी दिये गये। कार्यक्रम का संचालन इतिहास विभाग के श्री ललित पंवार ने किया जबकि सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन आफरी के जन सम्पर्क अधिकारी डॉ. नवीन कुमार बोहरा ने किया।

कार्यक्रम के अन्त में विश्वविद्यालय परिसर में नीम, शीशम, मेलिया डूबिया, जामुन, बोगनमीलिया आदि के पचास पौधों का रोपण किया गया। इस अवसर पर सरदार त्रिलोक सिंह सलूजा ने परिसर में वन महोत्सव के दौरान लगने वाले पौधों की सार संभाल का जिम्मा लिया। इस हेतु मुख्य अतिथि श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने उनका सम्मान किया। कार्यक्रम में आफरी के अधिकारी एवं कर्मचारी तथा जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं छात्र बड़ी संख्या में उपस्थित थे। पौध रोपण कार्यक्रम में आफरी के श्री रतनाराम लोहरा, श्री सार्दुलराम, श्री कानसिंह एवं श्री तेजाराम ने सहयोग किया। वन महोत्सव के सफल संचालन हेतु समिति में जयनारायण

व्यास विश्वविद्यालय इतिहास विभाग के श्री भगवानसिंह शेखावत, श्री सुरेश कुमार, श्री भवानीसिंह वाणिज्य विभाग के क्षितिज महर्षि, हिन्दी विभाग के श्री महिपाल सिंह राठौड़, रसायन विभाग के श्री ओमप्रकाश विश्नोई, कानून विभाग के श्री पारीक, सैन्य विभाग के श्री अशोक तथा अर्थशास्त्र के देवकरण जी ने सहयोग दिया।